FOR MLIS STUDENTS

Course : - Masters of Library and Information Science (MLIS)

Paper : - I

Prepared By: - Aftab Ahmad, Assistant Librarian, Faculty Library Science School of Library and Information Sciences, Nalanda Open University

Topic: - LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE EDUCATION IN INDIA

Scanned with CamScanner

इकाई-11

भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान की शिक्षा
(Library and Information Science Education in India)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

11.0 उद्देश्य (Objectives)

11.1 परिचय (Introduction)

11.2 भारत में पुस्तकालय शिक्षा का ऐतिहासिक विकास (Development Library Education in India)

11.3 एल० आई० एस० शिक्षा का महत्व (Importance of LIS Education)

11.4 पुस्तकालय विज्ञान में शिक्षा के सन्दर्भ में विभिन्न समितियें एवं उनकी संस्तुतियें (Committees on Library Science Education and Their Recommendation)

11.5 पुस्तकालय विज्ञान में पाठ्यक्रम (Programs in Library Information Science)

11.6 सारांश (Summary)

11.0 उद्देश्य (Objective)

प्रस्तुत पाठ मे हम पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में शिक्षा के सन्दर्भ में भातर की यथास्थिति को समझने का प्रयास करेंगे । प्रारम्भ में हम पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में दी जाने वाली शिक्षा का ऐतिहासिक परिदृश्य प्रस्तुत करेंगे । तत्पश्चात् इस विशिष्ट क्षेत्र में शिक्षा की आवश्यकताओं एवं महत्वों को समझने का प्रयास करेंगे । भारत मे समय-समय पर पुस्तकालयों तथा पुस्तकालय एवं सचूना

Scanned with CamScanner

विज्ञान की शिक्षा की गुणवत्ता में उन्नयन के उद्देश्य से गठित की गयी विभिन्न समितियों एवं आयोगों जैसे यू०जी०सी० की पुस्तकालय समिति, यू०जी०सी० की रिव्यू समिति, ज्ञान आयोग, पुस्तकालय एवं सचूना तंत्र हेतु राष्ट्रीय नीति के लिए गठित की गयी समिति तथा राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन आदि पर चर्चा करते हुए उनकी संस्तुतियों पर प्रकाश डालेंगे। पाठ के अन्त में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान क्षेत्र हेतु भारत में चलाये जाने वाले विभिन्न पायक्रमों को सूचीबद्ध करते हुए उनमें से इस क्षेत्र के स्नातक पाठ्यक्रम– B.Lib. and I.Sc. एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम– M.Lib. and I.Sc. की प्रवेश व्यवस्था, पाठ्यक्रम (Syllabus) एव सेवायोजना की सम्भावनाओं पर प्रकाश डालेंगे।

11.1 परिचय (Introduction)

भारत में लेखन कला के प्रणाम प्राचीन काल से ही प्राप्त होते हैं। पुरातन काल में लेखन का कार्य शिलालेखों एव पाण्डुलिपियों पर किया जाता था। यह पाण्डुलिपिये भुर्ज पत्र, ताड पत्र, चर्म पत्र, अगरू पत्र तथा कागज पर लिखी हुयी प्राप्त हुयी हैं। प्राचीन बौद्ध यात्रा विवरणों से ज्ञात होता है कि इन पाण्डुलिपियों को मन्दिरों, मठों एवं विश्वविद्यालयों के विभिन्न संग्रह केन्द्रों में संरक्षित करके रखा जाता था। इस तरह के लेखन स्रोतों के संग्रह हेतु उचित शिक्षण एवं प्रशिक्षण के उदाहरण प्राचीन अभिलेखों से प्राप्त नहीं होते।

वर्तमान में सूचना एव पाठ्य सामग्रियों को एकत्रित कर उनके माध्यम से विभिन्न व्यक्तियों सूचना एवं अध्ययन सहयोग प्रदान करने हेतु पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र अपनी अहम भूमिका निभा रहे हैं। पुस्तकालयों का मूल दायित्व उसके सदस्यों की सूचना आवश्यकताओं को समझाना उनसे समबन्धित पाठ्य सामग्री एकत्रित करना एव उन पाठ्य सामग्रियों को सुविधाजनक रूप से उपयोगकर्ताओं को उपलध कराना है। पुस्तकालयों के इन सारे दायित्वों के उचित तरह से निर्वहन हेतु यह आवश्यक है कि पुस्तकालय मे कार्यरत व्यवसायिक स्टाफ के विभिनन सदस्य अपने कार्यों के सम्पादन में पूर्णत दक्ष हों एव वे पुस्तकालय में उपलब्ध पाठ्य सामग्रियो को गुणवत्तापरक तरीके से अपने उपयोगकर्ताओं को उपलब्ध कराएँ। पुस्तकालय कर्मियों की इस व्यवसायिक दक्षता हेतु यह आवश्यक है कि उनको विशिष्ट प्रकार की शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाये जो उन्हें पुस्तकालय विज्ञान की परम्पागत विधियों के साथ–साथ आद्यतन तरकनीकी में भी पारगत बनाये। इस उद्देश्य से विभिन्न शैक्षणिक सस्थाओं एव पुस्तकालयों में समय–समय पर विभिन्न पाठ्यक्रम एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता रहा है।

11.2 भारत में पुस्तकालय शिक्षा का ऐतिहासिक विकास (Development of Library Education in India)

वर्तमान युग मे पुस्तकालय शिक्षा का भारत में प्रथम उदाहरण बडौदा में देखने को मिलता है जहाँ स्थापित राज्य पुरतकालय तंत्र के कर्मचारियों के प्रशिक्षण हेतु मेलविल डेवी के शिष्य डब्ल्यू० ए० बोर्डन ने एक पुरतकालय विद्यालय की स्थापना सन् 1911 में की। वहीं वर्ष 1915 में ए० डी० डिक्सन ने पंजाब विश्वविद्यालय (लाहौर) में एक पुस्तकलाय विद्यालय की शुरूआत की, जो अपने में विश्व का कोलम्बिया विद्यालय / विश्वविद्यालय (यू० एस० एस०) के बाद दूसरा पुस्तकालय विद्यालय था।

Scanned with CamScanner

इनके पश्चात् डॉ० एस० आर० रंगनाथन ने वर्ष 1929 में मद्रास पुस्तकालय संघ में एक सर्टिफिकेट कोर्स की शुरूआत की। जिसे वर्ष 1931 में मद्रास विश्वविद्यालय ने जारी रखा एवं यह कोर्स बाद मे 1937 में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स के रूप में बदला गया। इसी तरह वर्ष 1935 में आन्ध्र विश्वविद्यालय ने एक सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया। जो कि जल्द ही बन्द कर दिया गया। वर्ष 1935 में इम्पीरियल पुस्तकालय के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री के० एस० आसादुल्लाह के नेतृत्व मे एक पुस्तकालय विज्ञान में डिप्लोमा कोर्स शुरू किया गया जो वर्ष 1946 तक चला। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय अपने मे ऐसा दूसरा विश्वविद्यालय था जिसने पुस्तकालय विज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स 1942 में शुरू किया। इसी तरह बम्बई विश्वविद्यालय ने यह कोर्स वर्ष 1943 में शुरू किया।

स्वतत्रता के पश्चात् डॉ० एस० आर० रंगनाथन के नेतृत्व में दिल्ली विश्वविद्यालय ने वर्ष 1947 में पुस्तकालय विज्ञान का पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा कोर्स शुरू किया। अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय में देश का पहला पुस्तकालय विज्ञान का स्नातक कोर्स 1957 मे शुरू किया। इसके पूर्व यहाँ सन् 1951 से पुस्तकालय विज्ञान में सर्टिफिकेट कोर्स चल रहा था।

11.3 एल० आई० एस० शिक्षा का महत्व (Importance of LIS Education)

पुस्तकालय किसी भी समाज में सूचनाओ एवं अध्ययन सामग्रीयों के संग्रह केन्द्र होते हैं। ये न केवल सूचनाओं को संग्रहित करते है बल्कि वे उन संग्रहित सूचनाओं को उपयोगकर्ताओं की सुविधाओं एवं आवश्यकताओं के अनुरूप प्रसंस्कृत करते हुए नवीन सेवाओं एव उत्पादो का स्वरूप देते हैं। साथ ही उक्त सूचनाओं, सेवाओं एवं उत्पादों को ज्यादा से ज्यादा उपयोगकर्ताओं तक पहुँचाने हेतु उन्हें विस्तारित करने का भी कार्य करते है।। समाज मे होने वाले विभिन्न शोध एव विकास कार्यों के पीछे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध कराते हुए ये पुस्तकालय अहम भूमिका निभाते हैं।

एक समाज के विकास में जिस तरह से गुणवत्तापरक शोध का महत्व होता है उसी तरह से किसी शोध कार्य को पर्याप्त सहयोग प्रदान करने में सम्पादित की जाने वाली विभिन्न सूचना सेवाओं का गुणवत्तापरक होना अत्यन्त आवश्यक है। पुस्तकालय द्वारा प्रदान की जाने वाली विभिनन सेवाएं उसमें कार्यरत विभिन्न पुस्तकालय कर्मियों के कौशल एव अनुभव के परिणाम के रूप में परिलक्षित होती हैं। अतः एक पुस्तकालय के द्वारा उन्नत सेवाएं तभी प्रदान की जा सकेंगी जब उसमे कार्यरत कर्मचारी तकनीकी रूप से प्रशिक्षित एव पर्याप्त रूप से अनुभवी होंगे। एल० आई० एस० शिक्षा को प्रदान करने का मुख्य उदेश्य इसी तरह के प्रशिक्षित व्यवसायियों को तैयार करना एवं उन्हें दिन प्रतिदिन होने वाले नवीन शोधों से अवगत कराना है। इसके माध्यम से हम न केवल नये प्रशिक्षित पुस्तकालय व्यवसायी तैयार कर सकते हैं बल्कि विभिन्न वरिष्ठ एवं पूर्व में कार्यरत पुस्तकालय व्यवसायियों को नवीन ज्ञान की जानकी देते हुए उसमें प्रशिक्षित कर सकते हैं।

11.4 पुस्तकालय विज्ञान में शिक्षा के सन्दर्भ में विभिन्न समितियें एवं उनकी संस्तुतियें (Committees on Library Science Education and Their Recommendation)

भारत मे पुस्तकालय विज्ञान की शिक्षा के उन्नयन के सन्दर्भ में समय–समय पर विभिन्न समितियें

Scanned with CamScanner

एवं आयोगों का गठन किया गया । प्रस्तुत भाग में कुछ इसी तरह की समितियों एवं आयोगों का वर्णन प्रस्तुत करते हुये उनकी संस्तुतियों पर प्रकाश डाला जायेगा ।

11.4.1 यू०जी०सी० लाइब्रेरी कमेटी (UGC Library Committee)

यू०जी०सी० ने वर्ष 1957 में डॉ० एस० आर० रंगनाथन की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया, जिसका उद्देश्य विभिन्न कॉलेजों एव विश्वविद्यालय में अवस्थित पुस्तकालयों की स्थिति का अध्ययन कर उस पर रिपोर्ट प्रस्तुत करना था । इस समिति की रिपोर्ट को यू०जी०सी० ने वर्ष 1959 में 'Development of University and College Libraries' के शीर्षक से प्रकाशित किया । इस समिति ने पुस्तकालय कर्मियों की स्थिति उनके वेतनमान एव उनके प्रशिक्षण पर विशेष अध्ययन किया एवं अपने प्रतिवेदन में पुस्तकाल कर्मियों का वेतन विभिन्न शैक्षणिक एवं शोध कर्मियों के समतुल्य रखने की संस्तुति की । समिति ने पुस्तकालय शिक्षा एवं पुस्तकालय विज्ञान के अध्ययन केन्द्रो से सम्बन्धित शिक्षा के मानक, परिक्षा प्रणाली एव शोध कार्यक्रमों के सन्दर्भ में एक अध्ययन की आवश्यकता को व्यक्त किया एव इसके लिए एक अन्ल्य समिति गठित करने की सिफारिश की ।

11.4.2 यू०जी०सी० रिव्यू कमेटी (UGC Review Committee)

यू०जी०सी० ने वर्ष 1961 में पुनः डॉ० एस० आर० रगनाथन की अध्यक्षता में एक अन्य समिति का गठन किया । इस समिति में भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान की शिक्षा के ऊपर पहली बार राष्ट्रव्यापी अध्ययन करके उस पर अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया । बाद में इस समिति के प्रतिवेदन को यू०जी०सी० ने 'Library Science in Indian Universities' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किया । इस समिति के द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रतिवेदन के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु निम्नलिखित हैं–

1. समिति ने पुस्तकालय कर्मियों को पर्याप्त प्रशिक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया ।
2. समिति ने योग्य पुस्तकालय कर्मियों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों की आवश्यकता को व्यक्त किया ।
3. राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालयों के तन्त्र को विकसित करना आवश्यक बताया ।

समिति ने भारत में पुस्तकालय शिक्षा के दृष्टिकोण से कुछ समस्याओं को भी उजागर किया । इनमें से पुस्तकालय शिक्षा से सम्बद्ध कुछ प्रमुख समस्याएँ निम्न हैं–

1. समिति के अनुसार पुस्तकालय शिक्षा के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में गुणवत्ता के मूल्यांकन की कोई व्यवस्था नहीं हैं । पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु योग्यता, प्रयोगात्मक प्रशिक्षण की व्यवस्था एव शिक्षकों की गुणवत्ता आदि में राष्ट्रीय स्तर पर कोई समानता नहीं है ।
2. पुस्तकालय शिक्षा से सम्बद्ध विद्यालयों में प्रवेश पाने वाले नये छात्रों की गुणता आधरित स्थिति बहुत ही खराब है ।
3. पुस्तकालय शिक्षा के क्षेत्र में सघन शोध का अत्यधिक अभाव है ।

Scanned with CamScanner

4. विभिन्न विश्वविद्यालयों में उच्चीकृत पाठ्यक्रमों के साथ–साथ सर्टिफिकेट कोर्स का भी संचालन हो रहा है ।

5. पुस्तकालय शिक्षा से सम्बद्ध विद्यालयों मे शिक्षण का कार्य मुख्यतः विश्वविद्यालय पुस्तकालयों के कर्मचारियों के द्वारा पार्ट टाइम स्वरूप में कराया जा रहा है ।

इस समिति ने अपनी संस्तुति में एक विश्वविद्यालय के पुस्तकालय विज्ञान विभाग के कार्यों को तीन स्तरों मे विभाजित किया । ये तीनों स्तर निम्नलिखित हैं–

1. वर्तमान में कार्यरत पुस्तकालय व्यवसायियो का प्रशिक्षण ।

2. पुस्तकालय विज्ञान मे स्नातकों (B.Lib Sc.) को तैयार करना एवं भविष्य में पुस्तकालय विज्ञान मे परास्नातक (M.Lib.Sc.) की उपाधि भी प्रदान करना ।

3. पुस्तकालय विज्ञान में शोध कार्य सम्पादित करना एवं विभिन्न व्यवसायिक रूप से योग्य पुस्तकालय कर्मियों को शोध कार्य के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना ।

11.4.3 पुस्तकालय एवं सूचना तंत्र पर राष्ट्रीय नीति हेतु गठित समिति (Committee on Natinoal Policy on Library and Information System)

भारत सरकार ने वर्ष 1985 में प्रो० डी० पी० चट्टोपाध्याय की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया जिसका उद्देश्य भारत के लिए National Policy on Library and Informalin System तैयार करना था । इस समिति ने वर्ष 1986 में अपनी रिपोर्ट भारत सरकार के समक्ष प्रस्तुत की । इस रिपोर्ट में पुस्तकालय शिक्षा से सम्बन्धित समाहित किये गये प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं–

1. समिति के अनुसार भारत के विभिन्न विश्वविद्यालय एवं समकक्ष संस्थानों में जहाँ पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के पाठ्यक्रम परास्नातक स्तर पर चलाए जा रहे है, उन्हें इन पाठ्यक्रमो मे विशेषकर सूचना तकनीकी के क्षेत्र में उचच मानकों को अपनाना चाहिए जिससे की वे पाठ्यक्रम गुणवत्ता के उच्च स्तर को प्राप्त कर सकें ।

2. समिति के अनुसार विभिन्न अभिकरणों के द्वारा अर्धव्यवसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चालये जा सकते हैं । किन्तु इन पाठ्यक्रमों को चलाने में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि उनके राष्ट्रीय स्तर पर समानता एवं गुणवत्ता सुनिश्चित की जाये ।

3. समिति ने वर्तमान परिदृश्य में पुस्तकालयों की सचालन से सम्बद्ध विभिन्न तकनीकियों के तेजी से बदलाव को दर्शाते हुए यह स्पष्ट किया की भारत में पुस्तकालय एव सूचना व्यवसायियों को नये तकनीकी विकास के सन्दर्भ में अद्यतन रखने हेतु उन्हें पर्याप्त सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए । इसके लिए इस क्षेत्र में सुनियोजित तरीके से सतत् शिक्षा पाठ्यक्रम चलाये जाने चाहिए ।

4. समिति ने पुस्तकालय एव सूचना विज्ञान के विभिन्न पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने हेतु एक प्रत्यायन संस्था (Accreditation Agency) की आवश्यकता व्यक्त की । जिससे शिक्षा के इस क्षेत्र मे दिये जाने वाले प्रशिक्षण हेतु गुणवत्ता एवं मानकों को तय किया जा सके ।

Scanned with CamScanner

5. समिति के अनुसार पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान की उच्च शिक्षा एवं शोध से सम्बन्धित राष्ट्रीय आवश्यकता को पूरा करने हेतु एक राष्ट्रीय केन्द्र की स्थापना की जानी चाहिए।

6. समिति के अनुसार पुस्तकालय एव सूचना विज्ञान से सम्बद्ध विभिन्न व्यवसायियों की स्थिति, वेतनमान एवं शैक्षणिक सुविधाएँ उनकी मूल जिम्मेदारियों अथवा उत्तरदायित्वों के सापेक्ष में होने चाहिए।

7. समिति के अनुसार राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालय एवं सूचना तंत्र को अधिक मजबूती प्रदान करने के लिए भारत सरकार द्वारा एक 'अखिल भारतीय पुस्तकालय सेवा' का गठन किया जाए एवं जब सम्भव हो तब इसका क्रियान्वयन किया जाना चाहिए।

8. समिति के अनुसार राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालय एवं सूचना तंत्र में विविध प्रकार के सुधारों को क्रियान्वित करने के लिए भारत सरकार द्वारा एक पुस्तकालय एवं सूचना तंत्र का राष्ट्रीय आयोग गठित किया जाये।

11.4.4 राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन (National Mission on Libraries)

भारत सरकार के संस्कृति मन्त्रालय ने राष्ट्रीय विज्ञान आयोग (National Knowledge Commission) की संस्तुतियों को स्वीकार करते हुए वर्ष 2012 में राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन का गठन भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र को विकसित करने के लिये किया। इस मिशन में बाद में विभिन्न चार महत्वपूर्ण क्षेत्रों को मजबूत करने के लिये चिन्हित किया। ये क्षेत्र हैं–

- Nationla Virtual Library of India का निर्माण
- राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन के आदर्श पुस्तकालयों (Model Libraries) का निर्माण
- पुस्तकालय के सन्दर्भ में गुणात्मक एव परिमाणात्मक सर्वेक्षण (Qualitative and Quuantitative Survey of Libraires)
- क्षमता विकास (Capacity Building)

वर्तमान में राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन अपने मूल उद्देश्यों की प्राप्ति एवं चिन्हित किये गये विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों के सम्वर्द्धन हेतु अपनी अलग–अलग गतिविधियों को सम्पादित कर विभिन्न प्रकार के प्रयास कर रहा है।

11.5 पुस्तकालय विज्ञान में पाठ्यक्रम (Programs in Library Information Science)

वर्तमान में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विषय एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक विषय के रूप में उभरा है। विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में छात्रों के मध्य सेवायोजन के उद्देश्य से यह एक लोकप्रिय विषय है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पाठ्यक्रम अलग–अलग स्तर पर संचालित किये जाते हैं–

1. पुस्तकालय विज्ञान में सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम
2. पुस्तकालय विज्ञान में डिप्लोमा पाठ्यक्रम

Scanned with CamScanner

3. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक पाठ्यक्रम
4. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम
5. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में एम० फिल० पाठ्यक्रम
6. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में पी–एच०डी० पाठ्यक्रम

उपर्युक्त पाठ्यक्रमों में सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम 10+2 स्कूलों में, डिप्लोमा पाठ्यक्रम पॉलीटेक्निक कॉलेजों में मुख्यतः चालये जाते हैं। अन्य सभी पाठ्यक्रम विश्वविद्यालयों के प्रचलित पाठ्यक्रम हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने वर्ष 1992 में Curriculum Development Committee का गठन यिका। इस समिति ने अपनी संस्तुति में पुस्तकालय एवं सूचना विान विषय में द्विवर्षीय एकीकृत परास्नातक पाठ्यक्रम चलाने की सलाह दी। जिसके आधार पर वर्तमान में कुछ विश्वविद्यालयों ने एक वर्षीय बी० लिब० एवं एक वर्षीय एम० लिब० के स्थान पर द्विवर्षीय एकीकृत वासरूपसतक वसद्शक्रम के साथ एक वर्षीय बी० लिब० के स्थान पर द्विवर्षीय एकीकृत परास्नातक पाठ्यक्रम शुरू किये है।। हालांकि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के वर्ष 2015 के आदेश में द्विवर्षीय एकीकृत परास्नातक पाठ्यक्रम के साथ एक वर्षीय बी० लिब० एवं एक वर्षीय एम० लिब० पाठ्यक्रमो को चलाने का आदेश दिया है।

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में सर्वाधिक प्रचलित एवं सेवा योजन के दृष्टिकोण से अध्यधिक महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम इसमें स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम हैं। इन्हें प्रचलित तौर र क्रमशः बी० लिब० एवं एम० लिब० के नाम से पहचाना जाता है। अब हम इन्हीं पाठ्यक्रमों का आवश्यक विवरण प्रस्तुत करेंगे।

11.5.1 पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक पाठ्यक्रम (Bachelor of Library and Information Science Course)

यह एक वर्षीय पाठ्यक्रम है एवं इसमें प्रवेश हेतु आवश्यक शैक्षणिक योग्यता किसी भी विषय में स्नातक होना है। कुछ विश्वविद्यालयों में यह वार्षिक कोर्स के रूप में सचालित किया जाता है। वहीं कुछ विश्वविद्यालय इसे दो सेमेस्टर मे सचालित करते हैं। इस कोर्स में अलग–अलग विश्वविद्यालयों में भिन्न–भिन्न पत्र पढाये जाते हैं, किन्तु सामान्यतः इस पाठ्यक्रम में निम्नलिखित विषय क्षेत्रों को सम्मलित किये जाने के प्रमाण प्राप्त होते हैं–

1. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के आधार (Foundations of Library and Information Science)
2. पुस्तकालय प्रबंधन (Library Mangement)
3. पुस्तकालय वर्गीकरण–सिद्धांत एवं अभ्यास (Library Classification-Theory and Practice)
4. पुस्ताकालय सूचीकरण–सिद्धात एवं अभ्यास (Library Cataloguing-Theory and Practice)
5. सन्दर्भ एवं सूचना स्रोत (Reference and Information Sources)
6. सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology)

Scanned with CamScanner

विभिन्न विश्वविद्यालयों में पढाये जाने वाले इस पाठ्यक्रम में सम्मिलित किये गये अलग–अलग विषयों के सैद्धांतिक एवं अभ्यास के क्षेत्रों का अनुपात आवश्यकता एवं निर्णय के अनुसाद भिन्न–भिन्न होता है ।

इस पाठक्रम को पूर्ण करने के पश्चात् कोइ छात्र किसी पुस्तकालय अथवा सूचना केन्द्र में विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक एवं अर्द्धव्यवसायिक पदों जैसे पुस्तकालय सहायक, व्यवसायिक सहायक, अर्द्धव्यवसायिक सहायक, तकनीकी सहायक इत्यादि के लिये पात्र हो जाता है ।

11.5.2 पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (Master of Library and Information Science Course)

यह पाठ्यक्रम भी पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के स्नातक पाठ्यक्रम (Bachelor of Library and Information Science) के अनुरूप ही एक वर्षीय पाठ्यक्रम है । इस पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु पात्रता B.Lib. and I.Sc में उत्तीर्ण होना है । यह भी B.Lib and I.Sc की ही तरह एक वर्षीय पाठ्यक्रम अथवा दो सेमेस्टर के पाठ्यक्रम के रूप में संचालित किया जाता है । विभिन्न विश्वविद्यालयों में इस पाठ्यक्रम मे पढाये जाने वाले विषयों में सामान्यतः निम्नलिखित विषय सम्मिलित किये जाते हैं–

1. सन्दर्भ एवं सूचना सेवायें (Reference and Information Services)
2. उच्चीकृत पुस्तकालय वर्गीकरण एवं सूचीकरण (Advanced Library Classification and Catalouging)
3. पुस्तकालयों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उच्चीकृत अनुप्रयोग (Advanced Application of Information and Communication Technology in Libraries)
4. सूचना विश्लेषण, समेकन एवं पुर्नसम्वेष्टन (Information Analysis, Consolidation and Repackaging)
5. विशिष्ट पुस्तकालय तंत्र–सार्वजनिक, शैक्षणिक अथव विशिष्ट (Specialised Library System-Public, Acadmic or Special)–कोई एक (Any one)
6. सूचना साक्षरता (Information Literacy)
7. ज्ञान प्रबंधन (Knowledge Management)
8. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में शोध पद्धति (Research Methods in Library and Information Science)

ऊपर दर्शाय गये विभिन्न विषय क्षेत्र M. Lib and I.Sc. पाठ्यक्रम मे पढाये जाने वाले विषयों की सम्पूर्ण एवं आदर्श सूची नहीं है । विभिन्न विश्वविद्यालय अपनी आवश्यकताओं एवे निर्णयों के आधार पर इस सूची में और अन्य विषयों को सम्मिलित कर सकते है अथवा इसमें से किसी को कम कर सकते हैं । साथ ही इन विषयों में सैद्धांतिक एवं अभ्यास आधारित अध्ययन का अनुपाद भी अलग–अलग शैक्षणिक संस्थानों मे आवश्यकता के अनुरूप भिनन–भिन्न हो सकता है ।

एक M.Lib and I.Sc. उत्तीर्ण किये हुआ छात्र B.Lib and I.Sc. पाठ्यक्रम के अनुरूप उपर्लिखित समस्त पदों हेतु पात्रता रखता है । उनके अतिरिक्त यदि एक छात्र यू०जी०सी० द्वारा आयोजित

Scanned with CamScanner

लेक्चररशिप की पात्रता परीक्षा (UGC-NET) उत्तीर्ण कर लेता है तो वह किसी भी कॉलेज अथवा विश्वविद्यालय में सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष एवं सहायक प्राध्यापक के पद हेतु पात्र हो जाता है। यू०जी०सी०/सी०बी०एस०ई० द्वारा आयोजित लेक्चररशिप की पात्रता परीक्षा UGC-NET) हेतु पात्रता पूरी करने हेतु छात्र को M.Lib and I.Sc. की परीक्षा में कम से कम 55% अंक प्राप्त करना अनिवार्य होता है (एस०सी०/एस०टी० एवं दिव्यांग संवर्ग के छात्रों हेतु यह आवश्यकता 50% अंकों की है)।

11.6 सारांश (Summary)

इस पाठ में हमने भारत में राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में शिक्षा की स्थिति पर प्रकाश डाला। इसके लिए सर्वप्रथम हमने पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान की शिक्षा का ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत किया। हमने पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला। इस क्षेत्र के सम्वर्द्धन हेतु गठित की गयी विभिन्न समितियों एवं उनकी संस्तुतियों पर विस्तार से विवरण प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् भारत में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में संचालित किये जा रहे विभिन्न पाठ्यक्रमों पर प्रकाश डालते हुए इसके स्नातक पाठ्यक्रम– B.Lib. and I.Sc. एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम– M.Lib and I.Sc. पर विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया।

Scanned with CamScanner